शेख़ फ़रीद - सबद ३६
साहुरै पेईऐ कंत की कंत अगम अथाह ॥
सलोक, सेख फरीद, गुरु ग्रंथ साहिब, १३७९

साहुरै पेईऐ कंत की कंत अगम अथाह ॥
नानक सो सोहागणी जु भावै बेपरवाह ॥३२॥

सार: अनंत, सर्वव्यापी और अगम ऊर्जा, असीम आकाश, अथाह गहरे महासागरों और विशाल पृथ्वी के समान है जो सभी अपनी उपस्थिति हमारे साथ मौन और बिना किसी शर्त के साझा करते हैं। यह ऊर्जा स्वयं को शब्दों द्वारा नहीं बल्कि प्रकृति से हमारे संबंध के जुड़ाव के माध्यम से प्रकट होती है। हमारा सीमित दृष्टिकोण अक्सर हमें इसकी उपस्थिति को पहचानने से रोकता है जो हमसे अलग नहीं बल्कि हमारे अस्तित्व का एक अभिन्न अंग है। स्पष्टता तब उत्पन्न होती है जब हम आसक्ति को त्यागकर एक खुली, सहज, भरोसेमंद मानसिकता अपनाते हैं जिससे जीवन स्वाभाविक रूप से प्रवाहित होता है। इस शक्ति के साथ सच्चा बंधन बनाने के लिए हमें खुलेपन, स्थिरता और स्वीकार्यता जैसे गुणों को अपनाना होगा।

साहुरै पेईऐ कंत की कंत अगम अथाह ॥
चाहे दुल्हन ससुराल में हो या मायके में, उसका प्रियतम सदैव विद्यमान रहता है। किसी कारण से वह प्रियतमवह अगम और अथाह बना रहता है। यह प्रियतम उस शाश्वत तत्व का प्रतीक है जो जीवन के हर पहलू में व्याप्त है फिर भी वह मायावी, पहुंच से बाहर है।

नानक सो सोहागणी जु भावै बेपरवाह ॥३२॥
नानक कहते हैं कि केवल वही सुहागन धन्य है जो निःशर्त रहती है। यह उन लोगों का प्रतिबिंब है जो प्रकृति की इच्छा के साथ तालमेल बिठाते हैं और परिणामों से अप्रभावित रहते हैं वही वास्तव में धन्य हैं। (३२)

तत्त्व: शेख़ फ़रीद का यह सबद जिसका समापन गुरु नानक ने किया है हमें एक मुक्तिदायक सत्य की ओर संकेत करता है कि जो लोग बिना शर्त रहते हैं, अपेक्षाएँ नहीं रखते और प्रकृति के नियमों के साथ खुद को संरेखित करते हैं, वही वास्तव में धन्य हैं। इसमें संदेश है कि अपने दृष्टिकोण में एक निर्णायक बदलाव करें, यह समझते हुए कि सर्वव्यापी ऊर्जा के साथ सबसे गहरा संबंध प्रकृति की इच्छा पर प्रश्न उठाने से नहीं बल्कि उसके प्रवाह के साथ सामंजस्य सीखने से आता है। यह मार्ग बल या कठोरता का नहीं है बल्कि सहज समर्पण का है उस प्रियतम की निःशब्द महिमा के प्रति, जो हर जगह है फिर भी अज्ञात है।

पहलकदमी

Oneness In Diversity Research Foundation

वेबसाइट: OnenessInDiversity.com

ईमेल: onenessindiversityfoundation@gmail.com